

लौहित्य साहित्य सेतु : सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 1, संख्या: 1; जुलाई-दिसंबर, 2020

जब वह भूली गयी थी...

डी.आर.समादृता

हमारे घर में एक बिल्ली थी। उसका नाम था बिऊटी। हम उसके साथ रोज़ खेलती थीं और हम उससे बहुत प्यार करती थीं। पर हम उसे घर में घुसने नहीं देती थीं। एक दिन पापा ऑफिस से आते वक़्त खाने के लिए दो कबूतर ले आए। कबूतर सफ़ेद रंग के थे और इतने प्यारे थे कि उनका मांस खाने की हम कल्पना न कर सकी। इसीलिए मैं और मेरी बहन ने उन कबूतरों को मारने नहीं दिया। धीरे-धीरे कबूतरों से हमारा लगाव बढ़ने लगा। अब बिऊटी से ज़्यादा हमें कबूतर पसंद आने लगे। कबूतर भी हमें पसंद करने लगे। जब हम स्कूल के लिए निकलती, वे दोनों हमारे पीछे-पीछे आकर हमें गेट तक छोड़ आते थे। कबूतरों को दाल बहुत पसंद था। वे सुबह - सुबह रसोई घर में दाल के डिब्बे के ऊपर इंतज़ार करते रहते थे कि कब हम सोकर उठेंगी और उन्हें दाल खिलाएँगी। जब हम रसोई घर में पहुँचती थीं, तब वे दोनों खुशी से फुदकने लगते थे। बिऊटी से हमारा ध्यान हटता गया और जल्दी ही दोनों कबूतर हम दोनों बहनों के खास दोस्त हो गए। एक दिन सुबह उठकर हमने देखा कि एक कबूतर गायब है। हम बहुत रोयी। हमें पता

ही नहीं चला कि कबूतर कैसे गायब हो गया। हमें बहुत दुख हुआ। इस घटना के बाद हमने सोचा कि बचे हुए कबूतर का बहुत ध्यान रखना पड़ेगा। नहीं तो इसके साथ भी कुछ हो सकता है और हमें पता तक नहीं चलेगा। उस दिन के बाद हमने उसका बहुत ध्यान रखा और बिऊटी पूरी तरह से भूली जाने लगी। जब हम बाहर जाती, बिऊटी हमारे पीछे-पीछे आने लगती और हम घर के अंदर-बाहर कबूतर के पीछे-पीछे चलती रहती। कभी कबूतर पढ़ने के समय हमारे टेबल के ऊपर बैठ जाता, तो कभी अगर हम कुछ काम करती रहती, वह हमारे आस-पास घूमता रहता। अब वह हमारे घर के सदस्य की तरह हो गया था।

एक दिन जब हम स्कूल से लौटे तो देखा कि कबूतर हमारे गेट पर इंतज़ार कर रहा है। जब हम अंदर गए तो वह हमारे आगे-आगे रसोईघर की तरफ चलता रहा। हम भी उसके पीछे-पीछे जाकर रसोईघर पहुँचीं। कबूतर दाल के डिब्बे पर चढ़कर चहकने लगा। हम समझ गईं। तुरंत दाल का डिब्बा खोलकर मुट्ठीभर दाल निकाला और आँगन में उसके सामने डाल दिया। कबूतर की खुशी का ठिकाना न

रहा। हम कपड़े बदलने घर के अंदर चलीं। दादी बरामदे में बैठी थी। अचानक दादी ने देखा कि पीछे से बिऊटी कबूतर पर झपटने के लिए धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी और बेचारा कबूतर दाल खाने में व्यस्त था। उसको पता ही नहीं था कि उसका यह अंतिम दिन हो सकता है। दादी बूढ़ी हो चुकी थी। वे न तो उसे बचाने के लिए भाग सकती थी और न ही ज़ोर से चिल्ला सकती थी। पहले तो दादी ने हाथ हिलाया और बिऊटी को भगाने की कोशिश की। लेकिन उसका बिऊटी पर कोई असर न हुआ। उसके बाद जितने ज़ोर से हो सके वे चली और 'मत खा, मत खा' कहकर बिऊटी को भगाना चाहा। मम्मी ने दादी की आवाज सुनी और फटाफट बाहर आई। मम्मी ने पाया कि दादी आँगन की ओर देखकर पूरी ताकत से कुछ कहने की कोशिश कर रही हैं। मम्मी ने बाहर की तरफ देखा कि बिऊटी कबूतर को मुंह में दबोचकर भाग चुकी थी। मम्मी उसकी तरफ तेजी से चली, लेकिन तब तक बिऊटी बहुत ज़ोर से कबूतर को लेकर भाग गयी। मम्मी ने हमें आवाज लगाकर जल्दी बुलाया। हमें पता ही नहीं था कि बाहर क्या हो रहा था। हम फटाफट बाहर आयीं, तो दादी ने हमें सब किस्सा बताया। हमें आँगन में सिर्फ कबूतर का एक पंख मिला और खून देखा। यह

देखकर हमें रोना आ गया। हमें बहुत दुख हुआ। बहुत दिनों तक हमें कबूतर का दुख सताता रहा।

हम अकेली पड़ गई थीं। धीरे-धीरे हमें यह महसूस हुआ कि बिऊटी भी शायद अकेली पड़ गयी थी। हमें इस बात का बहुत अफसोस हुआ कि कबूतरों के आने से हम बिऊटी को भूल चुकी थीं। हमने कबूतरों को बहुत प्यार किया वह तो ठीक है, लेकिन हम बिऊटी को भूल रही थीं, यह हमने गलत काम किया था। अब हमने दोनों कबूतरों को भी खो दिया और बिऊटी को भी। अगर आपको लग रहा है कि बिल्ली तो कबूतर खाती ही है, तो बिऊटी ने भी खाया। लेकिन ऐसा नहीं था। अगर वह चाहती तो बहुत पहले ही बिऊटी कबूतरों को खा सकती थी। पर उसने ऐसा नहीं किया। जब बिऊटी को लगा कि उसके हिस्से का प्यार कबूतर को दिया जा रहा है, तब उसने यह काम करने की सोची। बिऊटी अब भी हमारे इलाके में ही रहती है। कभी-कभी रास्ते में अब भी बिऊटी मिल जाती है। जब वह हमें देखती है, उसके हाव-भाव से ऐसा लगता है कि जैसे वह हमें पहचानती ही नहीं। हमने बिऊटी को दुःख पहुँचाया था और उसी की सजा हमें मिली। अब जब भी बिऊटी दिखाई देती है, मन में एक ही भाव आता है काश वह भूली न गई होती।

संपर्क-सूत्र:
पाँचवीं कक्षा
महर्षि विद्या मंदिर-IV
गुवाहाटी, असम